मूल जैन साहित्य का अध्ययन

(1) मूल जैन साहित्य कहने का क्या तात्पर्य है?

जैन धर्म प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण धर्म है। जैनियों की मान्यता है कि उनके 24 तीर्थंकर हुए हैं। पहला तीर्थंकर आदिनाथ उर्फ ऋषभ देव उर्फ स्वयंभू कश्यप थे। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे और 24वें और संसार का अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं। 24 तीर्थंकरों ने जो कुछ दिया, उपदेश, नियम, सिद्धांत, विचार वही जैन धर्म है।

तीर्थंकर यानि तीर्थ देने वाला। तीर्थ यानि रास्ता, नियम, विचार देनेवाला। यानि जिस पर चलकर कोई व्यक्ति मुक्ति / मोक्ष / लक्ष्य पा सकता है वही तीर्थ देनेवाले तीर्थंकर हैं। इसलिए तीर्थंकर का अर्थ है Path Finder (रास्ता जानने वाला)।

जैनियों का मानना है कि ऐसे तीर्थंकर 24 हुए हैं।

जैनियों का मानना है कि उनके जिन (Jain) 24 हुए हैं। जिन का अर्थ है विजेता (Conqueror)। कैसा विजेता? वह जिसने राग पर जीत हासिल कर ली। यानि लगाव पर, इच्छा पर, तृष्णा पर, यानि कमजोरी पर, काम पर, यानि क्रोध पर, लोभ पर, मोह पर, ईर्ष्या पर, संसार पर। जिसने जीत हासिल कर वही असली विजेता जिन है। जिनों ने जो कुछ दिया। वही ~~जैन~~ उपदेश, सिद्धांत, नियम, विचार, दर्शन वही तो जैन धर्म, जैन मत है। ऐसे जिन एक नहीं, 24 हुए ~~था~~ यानि जो तीर्थंकर हैं वही जिन हैं इसलिए जिनों के द्वारा, तीर्थंकर

के द्वारा आदेशित, प्रवेशित Religion है।
जैन Religion है। यह जैनियों को मानता
है, जो जैन धर्म के लोग हैं। लेकिन
इतिहास में माना जाता है, 24 तीर्थंकर में
से 1 से 22 तीर्थंकर तक, सबके सब
पौराणिक पात्र हैं यानि ऐसे पात्र है जिनकी
तीथि पर आप निर्धारित नहीं कर सकते
यह नहीं बता सकते कि वे कब हुए
इनका काल खंड क्या रहा। उनका वास्तविक
जन्म स्थान कहां रहा। इसलिए उन्हें ऐति-
हासिक पात्र नहीं माना जाएगा। यह नहीं
कह सकते कि ये सब थे ही नहीं यह
आहत करने वाली बात है। ये भी
नहीं कह सकते कि ये सब काल्पनिक
पात्र हैं यह भी अपमानजनक है, इसलिए
पूरे सम्मान के साथ यही कह सकते हैं
कि ये सब आराध्य हैं पूजनीय हैं, लेकिन
ऐतिहासिक पात्र नहीं हैं।

24 की सूची में मात्र अंतिम दो, यानि
23वां तीर्थंकर पार्श्वनाथ और 24वां
अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी, जो ऐति-
हासिक पात्र हैं, जिनकी जीवनी बनाई
जा सकती है इसलिए इन दोनों के
द्वारा दिया गया उपदेश नियम विचार
सिद्धांत है, वास्तव जैन धर्म है। इसमें
भी 24वें तीर्थंकर के बारे में सब कुछ
स्पष्ट है। जन्म, जन्म स्थान, वैराग्य,
शिक्षा, तपस्या, सर्वोच्च ज्ञान कैवल्य ज्ञान
प्राप्त करना, धर्म प्रवचन देना, अपने विचा-
रों को सामने रखना और 72 वर्ष की अवस्था
में निर्वाण प्राप्त करना। इसलिए ऐतिहासिक
रूप से यही माना जाता है कि जैन धर्म
के विचार को, पूरी तौर पर स्पष्ट किया

Scanned with CamScanner

महावीर स्वामी ने जो वास्तविकता कही है महावीर स्वामी के द्वारा दिया गया धर्म, दर्शन, विचार ही मूल जैन साहित्य है इसलिए मूल जैन साहित्य कहे गए **महावीर वाणी, महावीर वचन** कहे। दोनों बात एक ही है।

(2) मूल जैन साहित्य के रचनाकाल क्या?

जब यही माना गया कि मूल जैन साहित्य ही है महावीर वचन, तो फिर जो महावीर का काल, वही इस साहित्य का रचनाकाल। महावीर का जन्म **540 B.C** यानि छठी शताब्दी ई० पू० और महावीर का सर्वोच्च निर्वाण **468 ई० पू०**। इसलिए महावीर की संपूर्ण आयु **72** वर्ष (540-468) B.C, महावीर का Period- (छठी शताब्दी ई०पू० से 5वीं शताब्दी ई०पू०) यानि महावीर Post vedic काल के। जब महावीर ने यह साहित्य दिया तो यह मूल जैन साहित्य का कालखण्ड (6-4) Century B.C।

(540-468)

(3) मूल जैन साहित्य की भाषा क्या?

✓ **प्राकृत भाषा**

✓ Post vedic काल के उत्तर भारत में तीन भाषाएँ उभरी। (1) संस्कृत, (2) प्राकृत (3) पालि ये तीनों भाषा मूल वैदिक संस्कृत भाषा से निकली है मूल वैदिक संस्कृत भाषा **Indo-Aryan language** है Indo-Aryan language से तीनों निकली अत: तीनों भी **Indo-Aryan Language** है।

प्राकृत भाषा इसका आगमन ही हुआ है 6 century B.C में।

इस पर जितना वैदिक संस्कृत का प्रभाव है
उतना ही लोक संस्कृत, लोक भाषा का प्रभाव है।
यह ज्ञान साधारण की भाषा है महावीर
ने इसे ही अपनाया है इसलिए महावीर ने
जो कुछ दिया। 32 साल प्रचार करते हुए
वह सब कुछ प्राकृत भाषा में इसलिए
मूल जैन साहित्य की भाषा प्राकृत।
आप यह भी कह सकते हैं कि सामान्य
हिन्दू धर्म की भाषा संस्कृत बनी
जैन धर्म की भाषा प्राकृत बनी और
बौद्ध धर्म की भाषा पालि बनी।
इसलिए वेदांग और सूत्र आया संस्कृत
में। मूल जैन साहित्य आ रहा है
प्राकृत में मूल बौद्ध साहित्य आ
रहा है पालि में।

(4) क्या यह साहित्य मूलत: मौखिक है?

Yes

बुद्ध, महावीर के काल में लोग लिखना जान
गये हैं, लिखने की शुरुआत हो गई है।
लिखने का छिटपुट साक्ष्य भी मिलता है।
लेकिन ऐसा नहीं है कि सब साहित्य लिख-
कर तैयार हो रहा हो। इसलिए महावीर
32 साल प्रवचन देते रहे, उम्र के 40वें
वर्ष से उम्र के 72वें वर्ष तक। उनके
कोई लिखने वाले को साथ लेकर नहीं
चले। Ancient की परंपरा को कायम
रखते हुए सब कुछ मौखिक ही कहा
गया। इसलिए मूल जैन साहित्य है क्या
महावीर वाणी। सब कुछ मौखिक दिया
गया, बाद के आचार्य के लोगों ने लिखित
रूप दिया।